ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor = 8.35, January-June 2026, Submitted in January 2026

गिरिराज किशोर के उपन्यासों में गांधीवाद
('पहला गिरमिटिया' तथा 'बा' के विशेष संदर्भ में)

पंकज कुमार, शोधार्थी, हिंदी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, pankajkumarchaurasia1@gmail.com
डॉ. रामनरेश राम, (सहायक आचार्य), हिंदी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

शोध-सार

गांधीवाद केवल एक राजनीतिक विचारधारा नहीं, अपितु सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, श्रम की गरिमा तथा साध्य-साधन की पवित्रता पर आधारित एक समग्र जीवन-दर्शन है। प्रस्तुत शोध-पत्र गिरिराज किशोर के उपन्यासों में इस गांधी-दर्शन के रचनात्मक अंकन का अनुशीलन करता है। इसका केन्द्रीय आधार उनका महाकाव्यात्मक उपन्यास 'पहला गिरमिटिया' है, जो दक्षिण अफ्रीका में मोहनदास के 'महात्मा' बनने की प्रक्रिया को रचता है; तथा 'बा', जो कस्तूरबा के माध्यम से गांधीवादी मूल्यों का स्त्री-पक्ष उद्घाटित करता है। शोध की पद्धति निकट-पाठ पर आधारित है। मूल स्थापना यह है कि गिरिराज किशोर गांधीवाद को आदर्शवादी उपदेश के रूप में नहीं, बल्कि पीड़ा, संघर्ष और आत्म-शुद्धि से अर्जित एक जीवन्त अनुभव के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनके यहाँ सत्याग्रह अमूर्त सिद्धान्त नहीं, हाशिए के मनुष्य की गरिमा का व्यावहारिक अस्त्र बन जाता है।

बीज-शब्द : गांधीवाद, सत्याग्रह, अहिंसा, साध्य-साधन, सर्वोदय, श्रम की गरिमा, आत्म-शुद्धि, नैतिक रूपान्तरण।

1. प्रस्तावना

गांधीवाद बीसवीं सदी का सबसे मौलिक भारतीय जीवन-दर्शन है। इसके मूल में सत्य और अहिंसा हैं, और इन्हीं से सत्याग्रह, सर्वोदय, अपरिग्रह तथा साध्य-साधन की पवित्रता जैसे सिद्धान्त निःसृत होते हैं। हिन्दी कथा-साहित्य में अनेक रचनाकारों ने गांधी को छुआ है, किन्तु गिरिराज किशोर ने उन्हें एक सम्पूर्ण औपन्यासिक नायक के रूप में रचा। आलोचकों ने 'पहला गिरमिटिया' को गाँधीभाई का महाकाव्यात्मक कथ्य कहा है।[1]

इस उपन्यास की एक बड़ी विशेषता यह है कि यह गांधी को आसमान से उतरा 'महात्मा' नहीं मानता। यह उन्हें एक साधारण, भयभीत, संकोची मोहनदास के रूप में आरम्भ करता है, और फिर पीड़ा एवं संघर्ष की भट्ठी में तपाकर 'महात्मा' तक पहुँचाता है। शोध-लेखों में लेखक द्वारा गांधी-जीवन के तीन पक्षों – 'मोहरनिया', 'मोहनदास' तथा 'महात्मा' – के क्रमिक चित्रण को रेखांकित किया गया है।[2]

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य यह दिखाना है कि गिरिराज किशोर के यहाँ गांधीवाद उपदेश नहीं, अनुभव है। यह दर्शन उनके पात्रों के कर्म, संकोच और साहस – तीनों में मूर्त होता है।

2. सत्याग्रह और अहिंसक प्रतिरोध की अवधारणा

गांधीवाद का प्राण सत्याग्रह है – असत्य और अन्याय के विरुद्ध अहिंसक, किन्तु सक्रिय प्रतिरोध। 'पहला गिरमिटिया' में सत्याग्रह किसी पुस्तक से नहीं, गिरमिटिया मज़दूरों की दैनिक यातना से जन्म लेता है। गन्ने के खेतों का शोषण, 'कुली' का अपमान और नस्ली भेदभाव – यही वह भूमि है, जिस पर अहिंसक प्रतिरोध की पहली नींव पड़ती है।

बोअर-युद्ध के समय मोहनदास घायलों के लिए एम्बुलेंस-दल संगठित करते हैं। शत्रु-मित्र का भेद किए बिना सेवा करना – यह अहिंसा का सक्रिय रूप है, करुणा का व्यावहारिक विस्तार है।[3]

इसकी परिणति 'एशियाटिक पंजीकरण अधिनियम' – कुख्यात 'काला कानून' – के विरुद्ध डरबन में हुई ऐतिहासिक सत्याग्रह-सभा में होती है, जहाँ अपमानजनक पंजीकरण के विरुद्ध एकजुट होकर अहिंसक प्रतिकार का संकल्प लिया जाता है।[4] *यहाँ सत्याग्रह केवल राजनीतिक रणनीति नहीं रह जाता; वह आत्म-गौरव की पुनःप्राप्ति का साधन बन जाता है। गिरिराज किशोर दिखाते हैं कि अहिंसा कायरों का नहीं, अदम्य नैतिक साहस वालों का अस्त्र है।*

3. मोहनदास से महात्मा : नैतिक रूपान्तरण और आत्म-शुद्धि

गांधीवाद का दूसरा केन्द्रीय पक्ष है – सतत आत्म-शुद्धि। 'पहला गिरमिटिया' मूलतः एक रूपान्तरण की कथा है। आरम्भ का मोहनदास संकोची और साधारण है। पर जैसे-जैसे वह अन्याय को निकट से देखता है, उसके भीतर का

1डॉ. त्रिभुवन राय, 'पहला गिरमिटिया : गाँधीभाई का महाकाव्यात्मक कथ्य', गांधी मार्ग, गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली।
2सुरतनभाई एम. वसावा (2019), 'गिरिराज किशोर के उपन्यास "पहला गिरमिटिया" में गांधी का प्रभाव', रिसर्च गुरु, खंड 13, अंक 1, ISSN 2349-266X, पृ. 1503-1504।
3गिरिराज किशोर (1999), पहला गिरमिटिया, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृ. 453।
4वही, पृ. 702।

नैतिक पुरुष जागता जाता है। करनपिल्लै जैसे मज़दूर की नृशंस मृत्यु उसे भीतर तक झकझोर देती है।5 यह आघात ही उसकी चेतना का विस्तार करता है।

शोध-लेखों में इस यात्रा को आत्म-शुद्धि की क्रमिक प्रक्रिया कहा गया है – जहाँ व्यक्ति अपने भय, राग और स्वार्थ को तपाकर एक उच्चतर नैतिक सत्ता में ढलता है।6 गिरिराज किशोर का गांधी कोई पूर्व-निर्मित देवता नहीं; वह निरन्तर बनता हुआ मनुष्य है। यही 'बनते हुए महात्मा' का चित्रण उपन्यास को गांधीवाद का प्रामाणिक साहित्यिक भाष्य बनाता है। जिस 'आग के दरिया' ने असंख्य कुलियों को राख किया, उसी आग ने एक प्रवासी को तपाकर 'महात्मा' में ढाल दिया।

गांधीवाद की एक और कसौटी है – साध्य और साधन की पवित्रता। गांधी मानते थे कि शुद्ध साध्य के लिए भी अशुद्ध साधन वर्जित है। उपन्यास में मोहनदास का हर संघर्ष इसी मर्यादा से बँधा है। वे अन्याय से लड़ते हैं, पर घृणा से नहीं; वे विरोध करते हैं, पर शत्रु का अमानवीयकरण नहीं करते। यही नैतिक अनुशासन गांधीवाद को मात्र विद्रोह से अलग करता है।

4. श्रम की गरिमा, सर्वोदय और गांधीवादी मूल्यों की वाहक स्त्री : 'बा'

गांधीवाद श्रम को पूजा मानता है और सर्वोदय अर्थात् सबके उदय की कामना करता है। 'पहला गिरमिटिया' में मोहनदास स्वयं शारीरिक श्रम, सफ़ाई और सामूहिक जीवन को अपनाते हैं। 'कुली' और 'मालिक' का भेद मिटाने का यही गांधीवादी आग्रह आगे चलकर आश्रम-जीवन का आधार बनता है। प्रवासी भारतीय साहित्य में गांधी की इसी समावेशी दृष्टि को आलोचकों ने महत्त्वपूर्ण माना है।7

गांधीवाद का स्त्री-पक्ष 'बा' में उद्घाटित होता है। कस्तूरबा केवल गांधी की छाया नहीं हैं; वे गांधीवादी मूल्यों की सहभागी और संवाहक हैं। 'काले कानून' के विरुद्ध वे अपना निजी सत्याग्रह आरम्भ करती हैं और संयम-व्रत धारण करती हैं।8 यहाँ सत्याग्रह घर की देहरी से निकलकर स्त्री की आत्म-निर्णय-क्षमता का रूप ले लेता है। गिरिराज किशोर दिखाते हैं कि गांधीवाद की सफलता उन अनगिनत स्त्रियों के मौन त्याग पर भी टिकी थी, जिन्हें इतिहास ने प्रायः अनदेखा किया। इस प्रकार गिरिराज किशोर गांधीवाद को एक बहुआयामी जीवन-दर्शन के रूप में प्रस्तुत करते हैं – जिसमें सत्य और अहिंसा का सिद्धान्त, श्रम और सर्वोदय का व्यवहार, तथा स्त्री और पुरुष दोनों की सहभागिता एक साथ समाहित है। यही समग्रता उनके गांधी-चित्रण को इकहरे महिमामंडन से बचा लेती है।9

5. निष्कर्ष

समूचे विवेचन से स्पष्ट है कि गिरिराज किशोर के उपन्यासों में गांधीवाद एक जीवन्त, गतिशील और मानवीय दर्शन के रूप में प्रकट होता है। 'पहला गिरमिटिया' में वह सत्याग्रह, अहिंसा और आत्म-शुद्धि के रूप में मूर्त होता है; 'बा' में वह स्त्री-अस्मिता और सहभागिता के रूप में विस्तृत होता है। लेखक गांधी को न तो अतिमानवीय देवता बनाते हैं, न ही उन्हें केवल राजनीतिक प्रतीक तक सीमित करते हैं।

उनका गांधी एक भयभीत मनुष्य से उठकर महात्मा बनता है, और यही 'बनने' की प्रक्रिया गांधीवाद के सार को उद्घाटित करती है – कि महात्मापन जन्मसिद्ध नहीं, अर्जित होता है। इसी कारण गिरिराज किशोर का गांधी-चित्रण उपदेशात्मक न होकर अनुभवजन्य है, और इसी में उसकी कालजयी प्रासंगिकता निहित है। हिंसा, असहिष्णुता और अमानवीयकरण से जूझते आज के समय में यह गांधीवादी दृष्टि और भी सार्थक हो उठती है।

संदर्भ-सूची

- गिरिराज किशोर (1999). पहला गिरमिटिया. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ।
- गिरिराज किशोर. बा. नई दिल्ली: राजकमल पेपरबैक्स।
- राय, त्रिभुवन (डॉ.). 'पहला गिरमिटिया : गाँधीभाई का महाकाव्यात्मक कथ्य'. गांधी मार्ग. नई दिल्ली : गांधी शांति प्रतिष्ठान। (उपलब्ध : hindi.mkgandhi.org/gmarg) ।
- वसावा, सुरतनभाई एम. (2019). 'गिरिराज किशोर के उपन्यास "पहला गिरमिटिया" में गांधी का प्रभाव'. रिसर्च गुरु : ऑनलाइन जर्नल ऑफ़ मल्टीडिसिप्लिनरी सब्जेक्ट्स, खंड 13, अंक 1, ISSN 2349-266X, पृ. 1503 ।
- रॉय, अंजु (2026). 'गिरिराज किशोर के उपन्यास "पहला गिरमिटिया" में गांधी का वैचारिक प्रभाव'. सहचर ई-पत्रिका, ISSN 2395-2873 ।
- आकांक्षा, कुमारी. 'प्रवासी भारतीय साहित्य में गाँधी : एक विस्तृत अध्ययन'. सहचर ई-पत्रिका, ISSN 2395-2873 ।

5वही, पृ. 39।

6अंजु रॉय (2026), 'गिरिराज किशोर के उपन्यास "पहला गिरमिटिया" में गांधी का वैचारिक प्रभाव', सहचर ई-पत्रिका, ISSN 2395-2873।

7कुमारी आकांक्षा, 'प्रवासी भारतीय साहित्य में गाँधी : एक विस्तृत अध्ययन', सहचर ई-पत्रिका, ISSN 2395-2873।

8गिरिराज किशोर, बा, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, पृ. 116-117।

9सुरतनभाई एम. वसावा (2019), वही, पृ. 1504।